चयन आधारित क्रेडिट पद्धति

CHOICE BASED CREDIT SYSTEM

त्रिवर्षीय स्नातक हिंदी प्रतिष्ठा पाठ्यक्रम (कोर कोर्स)

HINDI (HONOURS) CORE COURSE (CC)

COURSE C-1 [Credit - 6] (L - 5, T - 1)

[व्याख्यान : 14 X 5 = 70 (5 क्रेडिट) शिक्षण 14 X 1 = 14 (1 क्रेडिट)]

Total Marks-100 (Th-80+IA-20)

हिंदी साहित्य का इतिहास : (रीतिकाल तक)

हिंदी साहित्य के क्रमिक विकास द्वारा हमें हमारी मध्यकालीन सांस्कृतिक विरासत की दिशा, दशा और साहित्यिक गतिविधियों का पता चलता है ; जिसे तीन कालखण्डों में बाँटकर उसे अध्ययन की व्यवस्था की गई है। हिंदी की साहित्यिक गतिविधियों की विकास-यात्रा में विभिन्न पड़ावों को जाने बिना उसका मूल्यांकन संभव नहीं है। इसे ध्यान में रखते हुए पाठ्यक्रम बनाया गया है ; ताकि छात्रों को हिंदी की सही दिशा , दशा का पता चल सके और वे उसका लाभ उठाते हुए अपने लक्ष्य की ओर बढ़ सके।

इकाई -1 L-18, T-4 **अंक - 20**

हिंदी साहित्य का काल विभाजन, आदिकाल के नामकरण की समस्या, आदिकाल की पृष्ठभूमि एवं इसकी प्रमुख धाराएँ : (सिद्ध, नाथ, जैन, रासो, लौकिक),

इकाई -2 L-18, T-4 **अंक - 20**

भक्तिकालीन पृष्ठभूमि, प्रवृत्ति एवं परिस्थितियाँ,

इकाई -3 L-17, T-3 **अंक - 20**

भक्तिकाल की धाराएँ: सगुण, निर्गुण : सामान्य परिचय,

इकाई -4 L-17, T-3 **अंक - 20**

रीतिकालीन परिस्थितियाँ एवं प्रवृत्तियाँ, रीतिकाल का नामकरण, रीतिकालीन विविध काव्यधाराएँ : (रीतिबद्ध, रीतिसिद्ध, रीतिमुक्त),

सहायक ग्रंथ :

1. हिंदी साहित्य का इतिहास - आचार्य रामचंद्र शुक्ल, नागरी प्रचारणी सभा, वाराणसी,
2. हिंदी साहित्य का इतिहास - डॉ0 नगेंद्र एवं हरदयाल, मयूर प्रकाशन, नई दिल्ली,
3. हिंदी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास - गणपतिचन्द गुप्त, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद,
4. हिंदी साहित्य का आदिकाल - आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, बिहार राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, पटना,
5. हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास - डॉ0 बच्चन सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली,
6. हिंदी साहित्य: उद्भव और विकास- आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली,
7. हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास - रामस्वरूप चतुर्वेदी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद,
8. हिंदी साहित्य का सुबोध इतिहास - बाबू गुलाब राय, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल प्रकाशन, आगरा,
9. हिंदी साहित्य की भूमिका - आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली,

त्रिवर्षीय स्नातक हिंदी प्रतिष्ठा पाठ्यक्रम (कोर कोर्स)

HINDI (HONOURS) CORE COURSE (CC)

COURSE C-2 [Credit - 6] (L - 5, T - 1)

[व्याख्यान : 14 X 5 = 70 (5 क्रेडिट) शिक्षण 14 X 1 = 14 (1 क्रेडिट)]

Total Marks-100 (Th-80+IA-20)

हिंदी साहित्य का इतिहास : (आधुनिक काल)

आधुनिक काल में पाश्चात्य प्रभाव के फलस्वरूप कई सामाजिक और ढाँचागत परिवर्तन देखने को मिले जिसने साहित्य की दिशा बादल दी। इस काल में हिंदी साहित्य में कई नई विधाओं का जन्म हुआ। विशेष रूप से गद्य की विभिन्न विधाओं का विकास इस काल की महत्त्वपूर्ण देन है। जिसने एक नये मूल्य बोध को जन्म दिया, जिसकी उपादेयता आज भी है। परिवर्तन का नित्यत्व एक नई दिशा की ओर इशारा करती है। छात्र उससे प्रभावित हुए बगैर रह जाते। इस बात को ध्यान में रखते हुए इसे पाठ्यक्रम में रखा गया है।

इकाई -1 L-18, T-4 अंक - 20

आधुनिक कालीन पृष्ठभूमि - सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक,
हिंदी नवजारण में विविध संस्थाओं का योगदान ,

इकाई -2 L- 18, T-4 अंक - 20

हिंदी पद्य साहित्य का विकास - प्रमुख कवियों एवं काव्यधाराओं का सामान्य परिचय :

भरतेन्दुयुग, द्वेवेदीयुग, छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नई कविता, समकालीन कविता,

इकाई -3 L-17, T-3 अंक - 20

हिंदी गद्य का विकास: सामान्य परिचय - उपन्यास, कहानी, निबंध, नाटक एवं एकांकी, आलोचना,

इकाई -4 L-17, T-3 अंक - 20

हिंदी गद्य की अन्य विधाएँ - रेखाचित्र, संस्मरण, रिपोतार्ज, जीवनी, आत्मकथा,

सहायक ग्रंथ :

1. हिंदी साहित्य का इतिहास - डॉ0 नगेंद्र एवं हरदयाल, मयूर प्रकाशन, नई दिल्ली,
2. हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास - डॉ0 बच्चन सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली,
3. हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास - रामस्वरूप चतुर्वेदी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद,
4. हिंदी साहित्य का सुबोध इतिहास - बाबू गुलाब राय, लक्ष्मी नारायण प्रकाशन, आगारा,
5. आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास - डॉ0 बच्चन सिंह, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद,

त्रिवर्षीय स्नातक हिंदी प्रतिष्ठा पाठ्यक्रम (कोर कोर्स)

HINDI (HONOURS) CORE COURSE (CC)

COURSE C-3 [Credit - 6] (L - 5, T - 1)

[व्याख्यान : 14 X 5 = 70 (5 क्रेडिट) शिक्षण 14 X 1 = 14 (1 क्रेडिट)]

Total Marks-100 (Th-80+IA-20)

आदिकालीन एवं मध्यकालीन हिंदी कविता

हिंदी साहित्य की एक अविच्छिन्न धारा आदिकाल से प्रवाहित होती रही है जिसपर तदयुगीन परिस्थितियों का प्रभाव देखा जा सकता है। आदिकालीन और मध्यकालीन कवियों ने अपनी कविताओं के माध्यम से उसे दर्शाने का प्रयास किया है। अतः उनकी रचनाओं को जाने वगैर उस युग का मूल्यांकन संभव नहीं है। अतः इस काल की कविताओं का सम्यक अध्ययन इस पत्र का प्रमुख उद्देश्य रहा है।

पाठ्यपुस्तक - 1. विद्यापति पदावली - सं० डॉ० शिव प्रसाद सिंह, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद,

2. मध्यकालीन काव्य संग्रह: प्रस्तुतकर्ता - केंद्रीय हिंदी संस्थान आगरा, विश्वविद्यालय प्रकाशन , वाराणसी,

3. काव्य सुषमा - सं० सत्यकाम विद्यालंकार, नया साहित्य, कश्मीरी गेट दिल्ली

4. मीराबाई की सम्पूर्ण पदावली - सं० डॉ० रामकिशोर शर्मा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद,

5. जायसी ग्रंथावली - सं० आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, नागरी प्रचारणी सभा, वाराणसी,

इकाई -1 L-18, T-4 **अंक - 20**

विद्यापति -1. भल हर भल हरि भल तुअ कला, 2. नन्दक नन्दन क़दम्बेरि तरू तरे,
3. देख-देख राधा-रूप अपार ,

मीराबाई - 1. पतियाँ मैं कैसे लिखूँ, लिख्योरि न जाय, 2. पायो जी मैं तो रामरतन धन पायो ,
3. घायल री गति घायल जाण्या ,

रसखान - 1. मानुष हौं तौ वही 'रसखानि', बसौं ब्रज गोकुल गाँव के ग्वारन,
2. या लकुटी अरू कामरिय पर , राज तिहूँ पुर को तजि डारौं,
3 मोर-पंखा सिर ऊपर राखि हौं , गुंज की माल गरे पहिरौंगी, **(काव्य सुषमा)**

इकाई -2 L-18, T-3 अंक - 20

कबीर : पद - 1. दुलहिनीं गावहु मंगलाचार, हम घरि आए राजा राम भरतार, 2. अवधू मेरा मनु मतिवारा , 3. माया महा ठगिनी हम जानी,

जायसी - नागमती-वियोग-खंड - बारहमासा: प्रथम बारह (12) पद, (नागमती चितउर-पथ हेरा ----- कंत धरै जंह पाव) तक, **(जायसी ग्रंथावली)**

इकाई - 3 L-18, T- 4 अंक - 20

सूरदास - 1. मेरौ मन अनत कहाँ सुख पावै, 2. किलकत कान्ह घुटुरूवनि आवत, 3. हमारै हरि हारिल की लकरी , 4. अति मलीन बृषभानु-कुमारी,

तुलसीदास -

कवितावली 1. एहि घाटतें थोरिक दूरि अहै कटि लौं जलु थाह देखाइहौं जू,
2. खेती न किसान को भिखारी को न भीख, बलि,

विनयपत्रिका - 1. रामको गुलाम, नाम रामबोला राख्यों राम,
2. ऐसी मूढ़ता या मनकी,

इकाई - 4 L-16, T-3 अंक - 20

घनानंद - 1. परकाजहि देह कों धारि फिरौ परजन्य जथारथ ह्वै दरसौ,
2. अति सूधो सनेह को मारग है जहाँ नेकु सयानप बाँक नहीं,

रहीम - दोहा संख्या: - 6, 7, 11, 12, 14, 15, 16, 20, 24, 25 = 10,
(मध्यकालीन काव्य संग्रह)

बिहारी - दोहा संख्या: - 01, 02, 03, 06, 09, 10, 13, 20, 22, 26 = 10,

(मध्यकालीन काव्य संग्रह)

सहायक ग्रंथ -

1. रसखान ग्रंथावली - प्रो० देशराज सिंह भाटी, अशोक प्रकाशन, नई सड़क, दिल्ली,
2. घनानंद कवित - सं० आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, वाणी वितान प्रकाशन, वाराणसी,
3. बिहारी सतसई - सं० आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, वाणी वितान प्रकाशन, वाराणसी,
4. सूरदास ग्रंथावली 5 खण्ड - किशोरीलाल गुप्त, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद,
5. कवितावली - गोस्वामी तुलसीदास, गीता प्रेस, गोरखपुर,
6. विनयपत्रिका - गोस्वामी तुलसीदास, गीता प्रेस, गोरखपुर,
7. कबीर ग्रंथावली - सं० श्यामसुंदर दास, नागरी प्रचारणी सभा, वाराणसी,
8. रहीम रचनावली - सं० डॉ० सत्यप्रकाश मिश्र, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद,

त्रिवर्षीय स्नातक हिंदी प्रतिष्ठा पाठ्यक्रम (कोर कोर्स)

HINDI (HONOURS) CORE COURSE (CC)

COURSE C-4 [Credit - 6] (L - 5, T - 1)

[व्याख्यान : 14 X 5 = 70 (5 क्रेडिट) शिक्षण 14 X 1 = 14 (1 क्रेडिट)]

Total Marks-100 (Th-80+IA-20)

आधुनिक हिंदी कविता (छायावाद तक)

हिंदी साहित्य का आधुनिक काल का प्रारम्भ 1850 ई० से माना जाता है जिसका मूल कारण पाश्चात्य प्रभाव रहा है। पाश्चात्य संसाधनों से रूबरू होने के कारण हमारी सोच में परिवर्तन होने लगा। इस काल में भारत में राष्ट्रीय बीज अंकुरित हुए। छापेखाने का आविष्कार हुआ जिसका प्रभाव प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से हिंदी काव्य पर भी पड़ा। इसकी झलक इस काल की कविताओं में भी दिखाई पड़ता है। अतएव इस काल के विषय में सम्यक अनुशीलन करने तथा जानकारी हासिल करना ही इस पत्र का मुख्य उद्देश्य है।

पाठ्यपुस्तक - 1. आधुनिक काव्य संग्रह - सं० रामवीर सिंह, प्रस्तुतकर्ता - केंद्रीय हिंदी संस्थान आगरा, विश्वविद्यालय प्रकाशन , वाराणसी,

2. काव्य सुषमा - सं० सत्यकाम विद्यालंकार, नया साहित्य, कश्मीरी गेट दिल्ली,

इकाई -1 L-18, T-4 **अंक - 20**

भारतेन्दु हरिश्चंद्र- हिंदी भाषा - 15 दोहे (1 से 15) तक,

अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'- प्रियप्रवास, (षष्टसर्ग) प्रथम 6 छंद

इकाई -2 L-18, T-4 **अंक - 20**

मैथलीशरण गुप्त - यशोधरा - 1, 2,

रामनरेश त्रिपाठी - जीवन-संदेश (काव्य सुषमा)

इकाई -3 L-17, T-3 **अंक - 20**

जयशंकर प्रसाद - 1. आँसू, 2. हे! लाज भरे सौन्दर्य बता दो, 3. ले चल वहाँ भुलावा देकर,

सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' - 1. जूही की कली, 2. संध्या सुंदरी, 3. बाँधो न नाव,

इकाई -4 L-17, T-3 अंक - 20

सुमित्रानंदन पंत - 1. प्रथम रश्मि, 2. वाणी!,

महादेवी वर्मा - 1. कौन पहुँचा देगा उस पार, 2. यह मंदिर का दीप इसे नीरव जलाने दो,

सहायक ग्रंथ :

1. छायावाद - डॉ० नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन- नई दिल्ली,
2. आधुनिक हिंदी साहित्य की प्रवृतियाँ - डॉ० नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन- नई दिल्ली,
3. आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास - डॉ० बच्चन सिंह, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद,

त्रिवर्षीय स्नातक हिंदी प्रतिष्ठा पाठ्यक्रम (कोर कोर्स)

HINDI (HONOURS) CORE COURSE (CC)

COURSE C-5 [Credit - 6] (L - 5, T - 1)

[व्याख्यान : 14 X 5 = 70 (5 क्रेडिट) शिक्षण 14 X 1 = 14 (1 क्रेडिट)]

Total Marks-100 (Th-80+IA-20)

छायावादोत्तर कविता

बीसवीं शताब्दी भारत के लिए उथल-पुथल वाला काल रहा है। हर क्षेत्र में यहाँ बदलाव देखने को मिलता है। साहित्यिक दृष्टि से देखें तो जितना परिवर्तन पिछले सौ वर्षों में नहीं हुआ था ; उतना बदलाव अगले 50 वर्षों में दिखने को मिला। इस काल में भारत को आजाद कराने की छटपटाहट और आजादी के बाद राजनीति से बहुत जल्द हीं मोहभंग होने लगा। जिसके प्रति एक विद्रोही स्वर स्वाधीनोत्तर कविताओं में देखने को मिलती है। भारतीय मानसिकता , साहित्य और कविता में होने वाले परिवर्तनों की ओर ध्यान दिलाना इस पत्र का मुख्य उद्देश्य है।

पाठ्यपुस्तक - आधुनिक काव्य संग्रह - सं० रामवीर सिंह , प्रस्तुतकर्ता - केंद्रीय हिंदी संस्थान आगरा , विश्वविद्यालय प्रकाशन , वाराणसी,

इकाई - 1 L-18, T-4 **अंक - 20**

केदारनाथ अग्रवाल - 1. खेत का दृश्य, 2. पक्षी-दिन,

नागार्जुन - 1. कालीदास, 2. बादल को घिरते देखा है,

इकाई - 2 L-18, T-4 **अंक - 20**

रामधारी सिंह 'दिनकर' - 1. हिमालय, 2. बुद्धदेव,

माखनलाल चतुर्वेदी - 1. - गीतों के राजा, 2. पुष्प की अभिलाषा,

इकाई - 3 L-17, T-3 **अंक - 20**

सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' - 1. बावरा अहेरी, 2. साँप के प्रति, 3. हमारा देश,

भवानी प्रसाद मिश्र - 1. लुहार से, 2. गीत फरोश,

इकाई - 4 L-17, T-3 **अंक - 20**

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना - 1. सुहागिन का गीत, 2. विवशता,

गिरजा कुमार माथुर - 1. पन्द्रह अगस्त, 2. रात हेमंत की,

सहायक ग्रंथ :

1. छायावाद - डॉo नामवार सिंह, राजकमल प्रकाशन- नई दिल्ली,
2. आधुनिक हिंदी साहित्य की प्रवृतियाँ - डॉo नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन- नई दिल्ली,
3. आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास - डॉo बच्चन सिंह, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद,

त्रिवर्षीय स्नातक हिंदी प्रतिष्ठा पाठ्यक्रम (कोर कोर्स)

HINDI (HONOURS) CORE COURSE (CC)

COURSE C-6 [Credit - 6] (L - 5, T - 1)

[व्याख्यान : 14 X 5 = 70 (5 क्रेडिट) शिक्षण 14 X 1 = 14 (1 क्रेडिट)]

Total Marks-100 (Th-80+IA-20)

भारतीय काव्यशास्त्र

भारतीय काव्यशास्त्रीय चिंतन का क्षेत्र बहुत व्यापक रहा है। इस क्षेत्र की परंपरा सुदीर्घ और शक्तिशाली रही है। इस दृष्टि से छात्रों के भारतीय काव्यशास्त्रीय चिंतन के बारे में जानना जरूरी हो जाता है। काव्यशास्त्र की परंपरा, काव्य लक्षण, काव्य हेतु, काव्य प्रयोजन, विभिन्न साहित्यशास्त्रीय सिद्धांत को इस पाठ्यक्रम में रखा गया है, जो काव्यशास्त्र की महत्वपूर्ण उपलब्धि है। इसके अध्ययन से छात्रों में समीक्षात्मक शक्ति बढ़ेगी।

इकाई-1 L-16, T-3 **अंक - 20**

काव्य लक्षण, काव्य हेतु, काव्य प्रयोजन,

इकाई-2 L-18, T-4 **अंक - 20**

रस सिद्धांत - रस की अवधारणा, रस निष्पति और साधारणीकरण,
अलंकार सिद्धांत - अलंकारों का वर्गीकरण ,

इकाई-3 L-18, T-4 **अंक - 20**

ध्वनि सिद्धांत - ध्वनि की अवधारणा, ध्वनि का वर्गीकरण,
रीति सिद्धांत - रीति की अवधारणा, रीति और गुण, रीति के भेद,

इकाई-4 L-18, T-3 **अंक - 20**

वक्रोक्ति सिद्धांत - वक्रोक्ति की अवधारणा, एवं प्रकार,
औचित्य सिद्धांत - औचित्य की अवधारणा एवं प्रकार,

सहायक ग्रंथ -

1. भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र - गणपति चंद्र गुप्त, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद,
2. भारतीय, पाश्चात्य काव्यशास्त्र तथा हिंदी आलोचना - डॉ0 रामचंद्र तिवारी , विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी,
3. भारतीय और पाश्चात्य काव्यशास्त्र - डॉ0 अर्चना तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी,
4. भारतीय काव्यशास्त्र - भगीरथ मिश्र, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी,

5. रस सिद्धांत - डॉ0 नगेंद्र, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली,
6. साहित्यिक निबंध - गणपति चंद्र गुप्त, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद,
7. साहित्यिक निबंध - त्रिभुवन सिंह एवं विजय बहादुर सिंह, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी,
8. भारतीय काव्यशास्त्र की आचार्य परंपरा - डॉ0 राधावल्लभ त्रिपाठी , विश्वविद्यालय प्रकाशन , वाराणसी,

त्रिवर्षीय स्नातक हिंदी प्रतिष्ठा पाठ्यक्रम (कोर कोर्स)

HINDI (HONOURS) CORE COURSE (CC)

COURSE C-7 [Credit - 6] (L - 5, T - 1)

[व्याख्यान : 14 X 6 = 70 (5 क्रेडिट) शिक्षण 14 X 1 = 14 (1 क्रेडिट)]

Total Marks-100 (Th-80+IA-20)

पाश्चात्य काव्यशास्त्र एवं नई समीक्षा

पश्चिम में साहित्य चिंतन की सुदीर्घ परंपरा को विद्यार्थियों के लिए सहज, ग्राह्य रूप से सुलभ कराने की दिशा में प्रस्तुत पाठ्यक्रम एक महत्वपूर्ण प्रयास है। विश्लेषण पद्धति , नई समीक्षा, विभिन्न वाद, इस पाठ्यक्रम का प्रमुख आकर्षण है। भारतीय काव्यशास्त्र के साथ-साथ पाश्चात्य काव्यशास्त्र के बारे में भी जानना आवश्यक है। इसमें विद्यार्थी विभिन्न विद्वानों के द्वारा दिये गए सिद्धांतों के साथ पाश्चात्य काव्यशास्त्र के स्वरूप के बारे भी समझने में सक्षम होंगे।

इकाई -1 L-16, T-3 **अंक - 20**

प्लेटो - काव्य संबंधी मान्यताएँ ,
अरस्तू - अनुकृति एवं विरेचन,

इकाई -2 L-16, T-3 **अंक - 20**

लोंजाइनस - काव्य में उदात्त की अवधारणा,
वर्ड्सवर्थ - काव्य भाषा का सिद्धांत,
कॉलरिज - कल्पना और फैंटेसी,

इकाई -3 L-18, T-4 **अंक - 20**

क्रोचे - अभिव्यंजनावाद,
टी. एस. एलियट - परंपरा और वैयक्तिक प्रतिभा, निर्वैयक्तिकता का सिद्धांत,
आई. ए. रिचर्ड्स - मूल्य सिद्धांत, सम्प्रेषण सिद्धांत,

इकाई -4 L-20, T-4 **अंक - 20**

नई समीक्षा , मार्क्सवादी समीक्षा, शास्त्रीयतावाद, यथार्थवाद, शैली विज्ञान,

सहायक ग्रंथ-

1. भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र - गणपति चंद्र गुप्त, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद,
2. भारतीय, पाश्चात्य काव्यशास्त्र तथा हिंदी आलोचना- डॉ0 रामचंद्र तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी,
3. भारतीय और पाश्चात्य काव्यशास्त्र - डॉ0 अर्चना तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी,
4. पाश्चात्य काव्यशास्त्र - डॉ0 भगीरथ मिश्र, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी,
5. पाश्चात्य काव्यशास्त्र के सिद्धांत - गणपति चंद्र गुप्त, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद,
6. पाश्चात्य काव्यशास्त्र - आचार्य देवेंद्र नाथ शर्मा, मयूर प्रकाशन, नई दिल्ली,
7. हिंदी आलोचना का विकास - मधुरेश, सुमित प्रकाशन, इलाहाबाद,
8. उत्तर आधुनिकता और उत्तर संरचनवाद - डॉ0 सुधीश पचौरी, प्रवीण प्रकाशन, नई दिल्ली,

त्रिवर्षीय स्नातक हिंदी प्रतिष्ठा पाठ्यक्रम (कोर कोर्स)

HINDI (HONOURS) CORE COURSE (CC)

COURSE C-8 [Credit - 6] (L - 5, T - 1)

[व्याख्यान : 14 X 5 = 70 (5 क्रेडिट) शिक्षण 14 X 1 = 14 (1 क्रेडिट)]

Total Marks-100 (Th-80+IA-20),

भाषा विज्ञान और हिंदी भाषा

भाषा विज्ञान अध्ययन की वह शाखा है जिसमें भाषा की उत्पति , स्वरूप, विकास आदि का वैज्ञानिक एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन किया जाता है। अध्ययन के अनेक विषयों में से आजकल भाषाविज्ञान को विशेष महत्व दिया जा रहा है। विद्यार्थी इस पाठ्यक्रम के अध्ययन के पश्चात भाषा एवं भाषा की प्रकृति के साथ-साथ मानव जीवन में भाषा के महत्व को समझने में सक्षम होंगे। इसके अलावा भाषाविज्ञान के अंगों एवं विभिन्न शाखाओं से परिचित होंगे। भाषाविज्ञान के सैद्धान्तिक पक्ष , भारतीय आर्य भाषाओं का ऐतिहासिक विकास, लिपि के ऊद्भव और विकास , देवनागरी लिपि की जानकारी भी प्राप्त कर सकेंगे। इस बात को ध्यान में रखकर इसे पाठ्यक्रम में जगह दिया गया है।

इकाई-1 L-15, T-3 **अंक - 20**

भाषा : स्वरूप एवं परिभाषा , भाषा और बोली,
भाषा विज्ञान : स्वरूप, परिभाषा एवं अंग, भाषा विज्ञान का अन्य शाखाओं से संबंध,

इकाई -2 L-20, T-4 **अंक - 20**

ध्वनि विज्ञान : स्वरूप एवं परिभाषा , ध्वनियों का वर्गीकरण,
रूपिम विज्ञान : स्वरूप , परिभाषा एवं प्रकार, (नाम, आख्यात, उपसर्ग और निपात,)

इकाई -3 L-20, T-4 **अंक - 20**

वाक्य विज्ञान : स्वरूप , परिभाषा एवं प्रकार,
अर्थ विज्ञान : स्वरूप एवं परिभाषा , अर्थ परिवर्तन की दिशाएँ,

इकाई -4 L-15, T-3 **अंक - 20**

हिंदी भाषा : उद्भव एवं विकास क्रम ,
देवनगरी लिपि स्वरूप , नामकरण एवं विशेषताएँ,

सहायक ग्रंथ -

1. हिंदी भाषा का इतिहास - डॉ० भोलानाथ तिवारी, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली,
2. भाषा विज्ञान - डॉ० भोलानाथ तिवारी, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली,
3. हिंदी भाषा - डॉ० हरदेव बाहरी, अभिव्यक्ति प्रकाशन, लखनऊ,
4. भाषा विज्ञान का रसायन - कैलाशनाथ पाण्डेय, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद,

त्रिवर्षीय स्नातक हिंदी प्रतिष्ठा पाठ्यक्रम (कोर कोर्स)

HINDI (HONOURS) CORE COURSE (CC)

COURSE C-9 [Credit - 6] (L - 5, T - 1)

[व्याख्यान : 14 X 5 = 70 (5 क्रेडिट) शिक्षण 14 X 1 = 14 (1 क्रेडिट)]

Total Marks-100 (Th-80+IA-20)

हिंदी उपन्यास

इस पत्र में गद्य साहित्य की महत्वपूर्ण विधा उपन्यास को लिया गया है। उपन्यास के अंतर्गत '**गोदान', 'त्यागपत्र', 'मानस का हंस'**, '**महाभोज'** को शामिल किया गया है। जब प्रेमचंद की उपन्यासों की बात होती है तो '**गोदान'** के बिना उपन्यास साहित्य पर सार्थक चर्चा नहीं हो सकती है। जैनेन्द्र कुमार की महत्वपूर्ण कीर्ति '**त्यागपत्र**' में व्यक्तिमन के विविध बिन्दुओं पर विचार किया गया है। 'क्लासिक' का सम्मान पा चुका '**मानस का हंस** ' गोस्वामी तुलसीदास के जीवन पर आधारित अमृतलाल नागर का वह उपन्यास है जिसके द्वारा गोस्वामी जी के जीवन से संबन्धित अनछुए पहलुओं को जाना जा सकता है। मन्नू भण्डारी के '**महाभोज'** उपन्यास में साधारण जन की जनतंत्र में कहाँ जगह है , यह जान पायेंगे। इन्हीं सब बातों को ध्यान में रख कर इन चारों उपन्यासों को पाठ्यक्रम में जगह दी गई है।

इकाई -1 L-20, T-4 **अंक - 20**

गबन - प्रेमचंद,

इकाई -2 L-15, T-3 **अंक - 20**

त्यागपत्र - जैनेन्द्र,

इकाई -3 L-20, T-4 **अंक - 20**

मानस का हंस - अमृतलाल नागर,

इकाई -4 L-15, T-3 **अंक - 20**

महाभोज - मन्नू भंडारी,

सहायक ग्रंथ-

1. उपन्यास साहित्य का इतिहास - डॉ० गुलाब राय, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली,
2. हिंदी उपन्यास का विकास - डॉ० माधरेश, सुमित प्रकाशन, इलाहाबाद,
3. हिंदी का गद्य साहित्य - डॉ० रामचंद्र तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी,
4. आधुनिक हिंदी उपन्यास - 2 खण्ड - डॉ० नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली,
5. आधुनिकता और हिंदी उपन्यास - डॉ० इंद्रनाथ मदान, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली,
6. प्रतिनिधि हिंदी उपन्यास - 2 खण्ड - डॉ० चमन लाल, हरियाणा साहित्य अकादमी, पंचकुला,

त्रिवर्षीय स्नातक हिंदी प्रतिष्ठा पाठ्यक्रम (कोर कोर्स)

HINDI (HONOURS) CORE COURSE (CC)

COURSE C-10 [Credit - 6] (L - 5, T - 1)

[व्याख्यान : 14 X 5 = 70 (5 क्रेडिट) शिक्षण 14 X 1 = 14 (1 क्रेडिट)]

Total Marks-100 (Th-80+IA-20)

हिंदी कहानी

इस पत्र के अंतर्गत कहानी के विकास से छात्रों का परिचय कराया जाएगा। युग के परिवर्तन के बीच कहानी की कथावस्तु और रूपविधान में परिवर्तन होता रहा है ; और उससे कहानी की दिशा बदलती रहती है। इस पाठ्यक्रम में कहानी की विकास यात्रा की जानकारी इन कहानियों के माध्यम से आप जान सकेंगे। हिंदी के प्रसिद्ध कहानीकारों की कहानियों से जीवन के तमाम महत्वपूर्ण बिन्दुओं की समझ होगी। सन साठ के बाद की कहानियों के बदले हुए तेवर से विद्यार्थियों का परिचय होगा। प्रेमचंद से लेकर कृष्णा सोबती तक की कहानियों का एक कलात्मक यात्रा तय करने के बाद वैश्विकरण के दौर में शैक्षिक लक्ष्यों के साथ -साथ साहित्य साधना में छात्र अपनी भूमिका तलाश कर सकेंगे। इन्हीं सब को ध्यान में रख कर इन कहानियों को पाठ्यक्रम में जगह दी गई है।

पाठ्यपुस्तक: 1. कहानी संग्रह - सं० भीष्म साहनी, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली,

2. कहानी संग्रह - सं० राजेन्द्र यादव, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली,

इकाई -1 L-18, T-4 **अंक - 20**

उसने कहा था - चंद्रधर शर्मा गुलेरी,

पूस की रात - प्रेमचंद,

इकाई -2 L-18, T-4 **अंक - 20**

आकाशदीप - जयशंकर प्रसाद,

पाजेब - जैनेन्द्र,

इकाई -3 L-17, T-3 **अंक - 20**

तीसरी कसम - फणीश्वरनाथ रेणु,

मलबे का मालिक - मोहन राकेश,

इकाई -4 L-17, T-3 **अंक - 20**

दोपहर का भोजन - अमरकांत,

सिक्का बादल गया - कृष्णा सोबती,

सहायक ग्रंथ -

1. हिंदी कहानी का इतिहास - डॉ० गोपाल राय, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली,
2. कहानी नई कहानी - डॉ० नामवर सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली,
3. नई कहानी: संदर्भ और प्रकृति - देवी शंकर अवस्थी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली,
4. हिंदी कहानी का विकाश - मधुरेश, सुमित प्रकाशन, इलाहाबाद,
5. हिंदी कहानी की विकास प्रक्रिया - आनंद प्रकाश,
6. एक दुनिया समानांतर - सं० राजेंद्र यादव, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली,
7. हिंदी कहानी संग्रह - सं० भीष्म साहनी, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली,
8. कहानी संग्रह - सं० हिंदी विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी,

त्रिवर्षीय स्नातक हिंदी प्रतिष्ठा पाठ्यक्रम (कोर कोर्स)

HINDI (HONOURS) CORE COURSE (CC)

COURSE C-11 [Credit - 6] (L - 5, T - 1)

[व्याख्यान : 14 X 5 = 70 (5 क्रेडिट) शिक्षण 14 X 1 = 14 (1 क्रेडिट)]

Total Marks-100 (Th-80+IA-20)

हिंदी नाटक एवं एकांकी

यह पाठ्यक्रम नाट्य साहित्य से संबन्धित है। इस पत्र का उद्देश्य साहित्य की सर्वाधिक सशक्त एवं प्रभावशाली विधा के रूप प्रचलित नाटक की उपादेयता की ओर ध्यान आकर्षित कराना है। भारतेन्दु तथा उनके समकालीन नाटककारों ने किस तरह लोक चेतना के विकास के लिए नाटकों की रचना की तथा समकालीन सामाजिक समस्याओं को नाटकों में अभिव्यक्त करने का अवसर प्राप्त किया। उसके बाद साहित्यिक रंगकर्म , नाट्यलेखन की परंपरा चली , छात्र उन तमाम बातों की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे। समकालीन समय में पूर्णांग नाटक और एकांकी नाटक की प्रासांगिकता पर विचार कर सकेंगे। समग्रतः नाटक के प्रति रूचि उत्पन्न होने से अभिनय द्वारा अपनी आजीविका का संधान कर पायेंगे।

पाठ्यपुस्तक - 1. छोटे नाटक - डॉ० शुकदेव सिंह, अनुराग प्रकाशन, वाराणसी,

इकाई -1 L-12, T-3 **अंक - 20**

अंधेर नगरी - भारतेन्दु हरिश्चंद,

इकाई -2 L-20, T-4 **अंक - 20**

स्कंदगुप्त - जयशंकर प्रसाद,

इकाई -3 L-20, T-4 **अंक - 20**

आषाढ़ का एक दिन - मोहन राकेश,

इकाई -4 L-18, T-3 **अंक - 20**

औरंगजेब की आखिरी रात - राम कुमार वर्मा,
विषकन्या - गोविंदवल्लभ पंत,
और वह जा न सकी - विष्णु प्रभाकर,

सहायक ग्रंथ -

1. नए एकांकी सं० अज्ञेय, राजकमल एण्ड संस, काश्मीरी गेट, दिल्ली,
2. हिंदी का गद्य साहित्य - डॉ० रामचंद्र तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी,
3. एकांकी और एकांकीकार - रामचरण महेंद्र,

त्रिवर्षीय स्नातक हिंदी प्रतिष्ठा पाठ्यक्रम (कोर कोर्स)

HINDI (HONOURS) CORE COURSE (CC)

COURSE C-12 [Credit - 6] (L - 5, T - 1)

[व्याख्यान : 14 X 5 = 70 (5 क्रेडिट) शिक्षण 14 X 1 = 14 (1 क्रेडिट)]

Total Marks-100 (Th-80+IA-20)

हिंदी निबंध एवं अन्य गद्य विधाएँ

हिंदी साहित्य में निबंधों की महत्वपूर्ण भूमिका रही हैं । इन निबंधों में निहित संदेशों के माध्यम से विद्यार्थी लाभान्वित होंगे। प्रस्तुत पाठ्यक्रम की प्रमुख विशेषताएँ और उपलब्धियां कुछ इस प्रकार हैं- प्रस्तुत पाठ्यक्रम में हिंदी साहित्य के ऐसे चुनिंदा निबंधों को रखा गया है जिससे विद्यार्थियों को ज्ञान वर्धन होगा । यहाँ निबंध के साथ ललित निबंध तथा व्यंग निबंध आदि का भी संयोजन किया गया हैं। रामचन्द्र शुक्ल, हजारी प्रसाद द्विवेदी, नगेन्द्र, शिवपूजन सहाय, विद्यानिवास मिश्र आदि के उच्च विचारों से वाकिफ़ होने का अवसर प्राप्त होगा ।

पाठ्यपुस्तक - निबंध निकष - डॉ० रामचन्द्र तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी,

इकाई -1 L-18, T-4 **अंक - 20**

मजदूरी और प्रेम - सरदार पूर्ण सिंह,
भाव एवं मनोविकार - आचार्य रामचन्द्र शुक्ल,

इकाई -2 L-18, T-4 **अंक - 20**

देवदारू - आचार्य हजारी प्रसाद द्वेवेदी,
मेरे राम का मुकुट भींग रहा है - विद्या निवास मिश्र,

इकाई -3 L-18, T-3 **अंक - 20**

महाकवि जयशंकर प्रसाद - शिवपूजन सहाय,
रज़िया - रामवृक्ष बेनीपुरी,

इकाई -4 L-16, T-3 **अंक - 20**

दादा स्वर्गीय बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' - डॉ० नगेंद्र,
ये हैं प्रोफेसर शशांक - विष्णुकान्त शास्त्री,

सहायक ग्रंथ -

1. हिंदी के प्रमुख निबंधकार : रचना और शिल्प - डॉ० गणेश खरे,
2. हिंदी निबंध और निबंधकार - डॉ० रामचन्द्र तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
3. हिंदी का गद्य साहित्य - डॉ० रामचन्द्र तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
4. निबंध निकष - डॉ० पी० एन० झा, असम हिंदी प्रकाशन, गुवाहाटी,

त्रिवर्षीय स्नातक हिंदी प्रतिष्ठा पाठ्यक्रम (कोर कोर्स)

HINDI (HONOURS) CORE COURSE (CC)

COURSE C-13 [Credit - 6] (L - 5, T - 1)

[व्याख्यान : 14 X 5 = 70 (5 क्रेडिट) शिक्षण 14 X 1 = 14 (1 क्रेडिट)]

Total Marks-100 (Th-80+IA-20)

हिंदी की साहित्यिक पत्रकारिता

हिंदी की साहित्यिक पत्रकारिता का हिंदी साहित्य में महत्वपूर्ण योगदान रहा है; इसी को मद्देनज़र रखते हुए इसे अनिवार्य पाठ्यक्रम में रखा गया है । इन पत्र-पत्रिकाओं ने हिंदी साहित्य को एक नई दिशा प्रदान की थी तथा समय की मांगानुसार हिंदी साहित्य की सटीक आलोचना कर इसका मार्गदर्शन किया है । प्रस्तुत पाठ्यक्रम की प्रमुख विशेषताएँ और उपलब्धियां कुछ इस प्रकार हैं- प्रस्तुत पाठ्यक्रम के अध्ययन से हिंदी पत्रकारिता का संक्षिप्त परिचय प्राप्त होने के साथ-साथ हिंदी साहित्य जगत में इन पत्र-पत्रिकाओं के योगदान के बारें में भी जानकारी प्राप्त होगी। यहाँ हिन्दी पत्रकारिता के सम्पूर्ण इतिहास का अध्ययन किया जाएगा । पत्रकारिता के इतिहास के साथ-साथ हर युग की प्रमुख प्रवृत्तियों पर भी विचार किया गया हैं । हर युग की महत्वपूर्ण पत्र-पत्रिकाओं का संक्षिप्त परिचय दिया गया है।

इकाई -1 L-15, T-3 **अंक - 20**

साहित्यिक पत्रकारिता - अर्थ और अवधारणा, महत्व,
भरतेन्दुयुगीन साहित्यिक पत्रकारिता - परिचय और प्रवृतियाँ,

इकाई -2 L-20, T-4 **अंक - 20**

द्विवेदीयुगीन साहित्यिक पत्रकारिता - परिचय और प्रवृतियाँ,
प्रेमचंद और छायावादयुगीन साहित्यिक पत्रकारिता - परिचय और प्रवृतियाँ,

इकाई -3 L-20, T-4 **अंक - 20**

स्वातंत्र्योत्तर साहित्यिक पत्रकारिता - परिचय और प्रवृतियाँ,
समकालीन साहित्यिक पत्रकारिता - परिचय और प्रवृतियाँ,

इकाई -4 L-15, T-3 **अंक - 20**

महत्वपूर्ण पत्र - पत्रिकाएँ : बनारस अखबार, भारत मित्र, हिंदी प्रदीप, स्वदेश, प्रताप, जनसत्ता,

सहायक ग्रंथ -

1. हिंदी की साहित्यिक पत्रकारिता - सं० प्रों० सूर्य प्रकाश दीक्षित,
2. पत्रकारिता के विविध आयाम - डॉ० राजेंद्र मिश्र, तक्षशीला प्रकाशन,
3. आधुनिक पत्रकारिता - डॉ० अर्जुन तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी,
4. हिंदी पत्रकारिता की सैद्धांतिक पृष्ठभूमि - डॉ० राठौर, तक्षशीला प्रकाशन,
5. नई पत्रकारिता और समाचार लेखन - सविता चड्ढा, तक्षशीला प्रकाशन,
6. सम्पूर्ण पत्रकारिता - डॉ० अर्जुन तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी,
7. संचारक्रान्ति और हिंदी पत्रकारिता - डॉ० अशोक कुमार शर्मा, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
8. हिंदी पत्रकारिता (भरतेन्दु पूर्व से छायावादोत्तर काल तक) - डॉ० धीरेन्द्र सिंह , विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी,

त्रिवर्षीय स्नातक हिंदी प्रतिष्ठा पाठ्यक्रम (कोर कोर्स)

HINDI (HONOURS) CORE COURSE (CC)

COURSE C-14 [Credit - 6] (L - 5, T - 1)

[व्याख्यान : 14 X 5 = 70 (5 क्रेडिट) शिक्षण 14 X 1 = 14 (1 क्रेडिट)]

Total Marks-100 (Th-80+IA-20)

प्रयोजनमूलक हिंदी

प्रयोजनमूलक हिंदी मूलतः एक व्यवहारिक पाठ्यक्रम हैं। अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान के अंतर्गत इस पाठ्यक्रम में हिंदी के विविध प्रयोजनमूलक रूपों की चर्चा हैं। इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से विद्यार्थियों को हिंदी की शैलियों हिंदी, उर्दू और हिन्दुस्तानी का ज्ञान प्राप्त होगा तथा हिंदी की संवैधानिक स्थिति के बारें में जानकारी होगी , जो निःसंदेह लाभदायक होगा। हिंदी भाषा के उद्भव विकास के साथ-साथ हिंदी भाषा के मानकीकरण एवं उसके प्रयोग क्षेत्रों पर भी विचार किया गया है । यहाँ विविध प्रकार के सरकारी पत्राचारों का अध्ययन होगा और साथ ही हिंदी की पारिभाषिक शब्दाबलियों का अनुशीलन कराया जाएगा । प्रयोजनमूलक हिंदी का सटीक अध्ययन रोजगार प्राप्ति में सहायक सिद्ध होगा ।

इकाई- 1 L-17, T- 3 **अंक - 20**

प्रयोजनमूलक हिंदी - स्वरूप, विशेषता एवं प्रकार,
संविधान में हिंदी , हिंदी भाषा के विविध रूप,

इकाई -2 L-18, T-4 **अंक - 20**

हिंदी का मानकीकरण एवं शैलियाँ,
हिंदी के प्रयोग क्षेत्र,

इकाई -3 L-18, T-4 **अंक - 20**

भाषा व्यवहार : सरकारी पत्राचार के प्रकार (सरकारी पत्र, अर्धसरकारी पत्र, ज्ञापन, परिपत्र,
अनुस्मारक , सूचना, अधिसूचना, कार्यालय आदेश), टिप्पण और मसौदा/आलेखन लेखन,
संचार माध्यम : (आकाशवाणी, दूरदर्शन, चलचित्र),

इकाई -4 L-17, T-3 **अंक - 20**

हिंदी भाषा में पारिभाषिक शब्द निर्माण की प्रक्रिया एवं प्रयोग,

सहायक ग्रंथ -

1. प्रयोजनमूलक हिंदी : सिद्धांत और प्रयोग - दंगल झाल्टे, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली,
2. प्रयोजनमूलक हिंदी - विनोद गोदरे, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली,
3. प्रयोजनमूलक हिंदी की नई भूमिका - डॉ० कैलाश नाथ पाण्डेय, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद,
4. प्रयोजनमूलक हिंदी : सिद्धांत और व्यवहार - डॉ० रघुनंदन प्रसाद , विश्वविद्यालय प्रकाशन , वाराणसी,
5. प्रयोजनमूलक भाषा और कार्यालयी हिन्दी - कृष्ण कुमार गोस्वामी,
6. प्रयोजनमूलक हिंदी - दिनेश प्रसाद सिंह, मोतीलाल बनारसीदस प्रकाशन, वाराणसी,
7. कार्यालयी हिंदी - विजयपाल सिंह, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी,

ABILITY ENHANCEMENT COMPULSORY COURSE (AECC)

(योग्यता संवर्द्धन अनिवार्य पाठ्यक्रम)

त्रिवर्षीय स्नातक हिंदी प्रतिष्ठा पाठ्यक्रम (कोर कोर्स)

HINDI (HONOURS) CORE COURSE (CC)

COURSE AEC-1 [Credit - 2] (L - 1, T - 1)

[व्याख्यान : 14 X 1 = 14 (1 क्रेडिट) शिक्षण 14 X 1 = 14 (1 क्रेडिट)]

Total Marks-50 (Th-40+IA-10)

हिंदी भाषा और व्याकरण

भाषा दो व्यक्तियों के बीच संप्रेषण का माध्यम है। भाषा के बिना मनुष्य गूंगा है। जीवित प्राणियों में एक मनुष्य ही ऐसा है जो अपनी भाषा को संरक्षित रखा है। मनुष्यों में भी अलग-अलग देशों , और प्रदेशों में भी अलग-अलग क्षेत्रों की अपनी भाषा होती है। ऐसे परिस्थितियों में मनुष्य इशारों की सहायता से अपना काम चलाता है , लेकिन उसे भाषा की संज्ञा नहीं दी जा सकती है। इस पत्र में भाषा की विशेषताओं पर प्रकाश डाला गया है। व्यक्ति जब भाषा का प्रयोग करता है तो उसे कई प्रकार की कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है , जैसे- उच्चारण की समस्या, लिंग निर्धारण की समस्या, वाक्यों के गठन आदि। इसी बात को ध्यान में रखकर इसे पाठ्यक्रम में स्थान दिया गया है।

इकाई -1 L-5, T-2 अंक - 10

भाषा की परिभाषा - प्रकृति एवं विविध रूप, हिंदी भाषा की विशेषताएँ,

इकाई -2 L-5, T-2 अंक - 10

हिंदी की वर्ण व्यवस्था : स्वर एवं व्यंजन - प्रकार एवं प्रयोग, ऊष्म, अल्पप्राण, महाप्राण, घोष , अघोष,

इकाई -3 L-5, T-2 अंक - 10

शब्द व्यवस्था : संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, विशेषण, उपसर्ग, प्रत्यय, संधि, कारक, शब्दस्रोत : तत्सम , तद्भव, देशज, विदेशज/आगत,

इकाई -4 L-5, T-2 अंक - 10

वाक्य व्यवस्था : वाक्य, उपवाक्य - स्वरूप एवं भेद,

सहायक ग्रंथ :

1. हिंदी व्याकरण और रचना - डॉ० वासुदेव नन्दन प्रसाद, भारती भवन, पटना,
2. हिंदी भाषा- डॉ० हरदेव बाहरी, अभिव्यक्ति प्रकाशन, इलाहाबाद,
3. हिंदी की प्रकृति और शुद्ध प्रयोग - ब्रजमोहन,
4. भाषा शिक्षण - डॉ० रवीद्र नाथ श्रीवास्तव,
5. हिंदी का विवरणात्मक व्याकरण - डॉ० लक्ष्मी नारायण शर्मा,
6. हिंदी भाषा - डॉ० भोलानाथ तिवारी, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली,
7. ऐतिहासिक भाषा विज्ञान और हिंदी भाषा - रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली,
8. हिंदी भाषा, व्याकरण और रचना - अर्जुन तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी,

SKILL ENHANCEMENT COURSE (SEC)

(कौशल संवर्द्धन पाठ्यक्रम)

त्रिवर्षीय स्नातक हिंदी प्रतिष्ठा पाठ्यक्रम (कोर कोर्स)

HINDI (HONOURS) CORE COURSE (CC)

COURSE SEC-1 [Credit - 4] (L - 3, T - 1)

[व्याख्यान : 14 X 3 = 42 (3 क्रेडिट) शिक्षण 14 X 1 = 14 (1 क्रेडिट)]

Total Marks-100 (Th-80+IA-20)

विज्ञापन : अवधारणा, निर्माण और प्रयोग

वर्तमान समय में विज्ञापन की प्रयोजनीयता को कोई नकार नहीं सकता हैं । विज्ञापन आज रोज़गार का सफल माध्यम साबित हो रहा है ; ऐसी परिस्थिति में इस विषय को पाठ्यक्रम में रखना आवश्यक प्रतीत होता है । प्रस्तुत पाठ्यक्रम की प्रमुख विशेषताएँ और उपलब्धियां कुछ इस प्रकार हैं - प्रस्तुत पाठ्यक्रम के अध्ययन से विज्ञापन के निर्माण और प्रयोग संबंधी जानकारी प्राप्त की जा सकती है , जो रोज़गार प्राप्ति में भी सहायक सिद्ध होगी। यहाँ विज्ञापन के भाषिक और शैलीगत विशेषता पर चर्चा की जाएगी।

इकाई -1 L-10, T-3 **अंक - 20**

विज्ञापन : - स्वरूप, अवधारणा और महत्व,
विज्ञापनों का वर्गीकरण - प्रमुख अंग और सिद्धान्त,

इकाई -2 L-11, T-4 **अंक - 20**

विज्ञापन के विविध माध्यम - विज्ञापन और विपणन का संदर्भ , सामाजिक विपणन और विज्ञापन , विज्ञापन अभियान योजना और कार्यान्वयन - स्थिति सम्बन्धी विश्लेषण, रणनीति, ब्रैंड इमेज,
उपभोक्ता वर्गीकरण और विज्ञापन अभियान में माध्यम योजना (मीडिया प्लानिंग) की भूमिका,

इकाई -3 L-11, T-4 **अंक - 20**

हिंदी विज्ञापनों से जुड़ी प्रमुख एजेंसियों का परिचय,
विज्ञापन सृजन - सृजनात्मक लेखन,
अभिकल्पना : (डिजाइन) के सिद्धान्त और अभिकल्पना (ले आउट) ,

इकाई -4 L-10, T-3 अंक - 20

विज्ञापन एवं हिंदी विज्ञापन : भाषिक , शैलीगत अध्ययन,

सहायक ग्रंथ -

1. आधुनिक विज्ञापन कला और व्यवहार - डॉ० अर्जुन तिवारी,. विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी,
2. जनसम्पर्क, विज्ञापन और संचार माध्यम - एन० सी० पंत,
3. आधुनिक विज्ञापन और जनसम्पर्क - डॉ० तारेश भाटिया,
4. प्रयोजनमूलक हिंदी - डॉ० दिनेश सिंह, बनारसीदास मोतीलाल प्रकाशन, पटना,
5. प्रयोजनमूलक हिंदी सिद्धान्त और प्रयोग - दंगल झाल्टे, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली,

SKILL ENHANCEMENT COURSE (SEC)

(कौशल संवर्द्धन पाठ्यक्रम)

त्रिवर्षीय स्नातक हिंदी प्रतिष्ठा पाठ्यक्रम (कोर कोर्स)

HINDI (HONOURS) CORE COURSE (CC)

COURSE SEC-2 [Credit - 4] (L - 3, T - 1)

[व्याख्यान : 14 X 3 = 42 (3 क्रेडिट) शिक्षण 14 X 1 = 14 (1 क्रेडिट)]

Total Marks-100 (Th-80+IA-20)

अनुवाद : सिद्धान्त और प्रविधि

अनुवाद को विज्ञान की संज्ञा दी गई है। अनुवाद विज्ञान के साथ-साथ एक कला भी है। जब दो भाषा भाषी मिलते है, तो वे एक-दूसरे की भाषा को समझ नहीं पाते हैं , तब जाकर अनुवाद की आवश्यकता महसूस होती है। वहाँ तो अनुवादक से काम चल जाता है , लेकिन जब दो भाषाओं की कविताओं , कहानियों, निबंधों की बात आती है तो यह समस्या खड़ी हो जाती है कि अनुवाद - भाषिक , शाब्दिक, भावानुवाद, सारानुवाद, छायानुवाद, कैसी होनी चाहिए और किसे सही माना जाय। एक हीं साहित्य का अनुवाद दो अलग-अलग व्यक्ति दो अलग-अलग तरीके से करते हैं ; इसके साथ हीं कार्यालयों की भाषा की अनुवाद, कैसे किया जाय। इन्हीं समस्याओं को ध्यान में रखकर इस पत्र को पाठ्यक्रम में स्थान दिया गया है।

इकाई -1 L-11, T-4 **अंक - 20**

अनुवाद : अर्थ, स्वरूप, प्रकृति एवं महत्व,
अनुवाद के प्रकार - भावानुवाद, छायानुवाद, सारानुवाद, काव्यानुवाद,

इकाई -2 L-10, T-3 **अंक - 20**

अनुवाद की प्रक्रिया एवं प्रयोग - विश्लेषण, अंतरण, पुनर्गठन,

इकाई -3 L-10, T-4 **अंक - 20**

सर्जनात्मक साहित्य : आवश्यकता एवं अपेक्षा,

इकाई -4 L-11, T-3 **अंक - 20**

अनुवाद व्यवहार : कार्यालयी, शासकीय, अर्धशासकीय, परिपत्र, ज्ञापन, कार्यालय आदेश, अधिसूचना,

सहायक ग्रंथ:

1. अनुवाद कला सिद्धान्त और प्रयोग - डॉ० कैलाश चंद भाटिया,
2. अनुवाद विज्ञान - डॉ० भोलानाथ तिवारी, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली,
3. अनुवाद विज्ञान : सिद्धान्त और प्रयोग - डॉ० राजमणि शर्मा, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली,
4. अनुवाद के विविध आयाम - डॉ० पूरंचन्द टंडन,
5. अनुवाद सिद्धान्त की रूपरेखा - डॉ० सूरज कुमार,
6. अनुवाद के सिद्धान्त - आर० आर० रेड्डी, अनुवादक - जे एल रेड्डी,

DISCIPLINE SPECIFIC ELECTIVE COURSE (DSE)

(विषय आधारित ऐच्छिक पाठ्यक्रम)

त्रिवर्षीय स्नातक हिंदी प्रतिष्ठा पाठ्यक्रम (कोर कोर्स)

HINDI (HONOURS) CORE COURSE (CC)

COURSE DSE -1 [Credit - 6] (L - 5, T - 1)

[व्याख्यान : 14 X 5 = 70 (5 क्रेडिट) शिक्षण 14 X 1 = 14 (1 क्रेडिट)]

Total Marks-100 (Th-80+IA-20)

असमीया भाषा एवं साहित्य

यह पत्र असमीया भाषा और साहित्य से संबंधित है। हिंदी के विद्यार्थियों के लिए अध्ययन की दृष्टि से यह पत्र नया होगा। साहित्य चाहे जहाँ का भी हो लेकिन साहित्यिक प्रवृतियाँ थोड़े-बहुत अंतर के बावजूद लगभग एक जैसी ही होती है। असमीया एक आधुनिक भारतीय आर्यभाषा है। इसके उद्भव और विकास की जानकारी का ज्ञान होना जरूरी है। साथ ही वहाँ की साहित्यिक गतिविधियों की जानकारी भी आवश्यक है जिसको ध्यान में रखते हुए इस पत्र में असमीया साहित्य के इतिहास का सामान्य परिचय **('आदियुग से लेकर रोमांटिक युग')** तक को पाठ्यक्रम में स्थान दिया गया है।

श्रीमंत शंकरदेव के बिना असमीया साहित्य की कल्पना अधूरी है, इस बात को ध्यान में रखकर उनके और उनके समर्थ शिष्य **माधवदेव** की **'वरगीतों'** को भी रखा गया है। रोमांटिक युग के **चन्द्र कुमार अगरवाला** और **नलिनीबाला देवी** की कविताओं के साथ **सैयद अब्दुल मलिक** और **भवेन्द्र नाथ शइकीया** की कहानियों को भी स्थान दिया गया है; ताकि विद्यार्थी असमीया भाषा एवं साहित्य की गतिविधियों को भी जान सकें।

पाठ्यपुस्तक - असमीया साहित्य निकष - सं० भूपेन रायचौधुरी, विश्वविद्यालय प्रकाशन विभाग, गुवाहाटी विश्वविद्यालय, गुवाहाटी,

इकाई-1 L-15, T-3 **अंक - 20**

असमीया भाषा : उद्भव और विकास ,

इकाई-2 L-20, T-4 **अंक - 20**

असमीया साहित्य : सामान्य परिचय - आदियुग, वैष्णव युग, रोमांटिक युग,

इकाई-3 L-20, T-4 **अंक - 20**

असमीया काव्य :

वरगीत : शंकरदेव एवं माधवदेव की वरगीत की विशेषता,

शंकर देव - 1. मन मेरि राम चरणहि लागु , 2. नारायण ! काहे भकति करों तेरा,

माधवदेव - 1. तेजरे कमलापति, 2. गोपाल गोवाली पाराते नाचे,

चंद्रकुमार अगरवाला - 1. मानव वंदना, 2. तेजीमला,

नलिनीवाला देवी - 1. परमतृष्णा, 2. जनमभूमि,

इकाई-4 L-15, T-3 **अंक - 20**

असमीया कहानी :

मरम मरम लागे - **सैयद अब्दुल मलिक**,

गहवर - **भवेन्द्र नाथ शइकीया,**

सहायक ग्रंथ -

1. असमीया साहित्य का इतिहास - चित्र महंत, असाम हिंदी प्रकाशन, माछखोआ, गुवाहाटी,
2. तुलनात्मक साहित्य की भूमिका - इंद्रनाथ चौधुरी, नेशनल पबलिशिंग हाउस, नई दिल्ली,
3. तुलनात्मक साहित्य - सं० डॉ० नगेंद्र,
4. असमीया साहित्य की रूपरेखा - सं० उपेंद्रनाथ गोस्वामी, असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, गुवाहाटी,

DISCIPLINE SPECIFIC ELECTIVE COURSE (DSE)

(विषय आधारित ऐच्छिक पाठ्यक्रम)

त्रिवर्षीय स्नातक हिंदी प्रतिष्ठा पाठ्यक्रम (कोर कोर्स)

HINDI (HONOURS) CORE COURSE (CC)

COURSE DSE-2 [Credit - 6] (L - 5, T - 1)

[व्याख्यान : 14 X 5 = 70 (5 क्रेडिट) शिक्षण 14 X 1 = 14 (1 क्रेडिट)]

Total Marks-100 (Th-80+IA-20)

छायावाद

छायावाद आधुनिक हिंदी साहित्य का एक महत्वपूर्ण पड़ाव है। प्रस्तुत पाठ्यक्रम में छायावाद के स्वरूप और विशेषताओं के साथ-साथ चतुष्ट्य कवियों की चुनिंदा कविताओं को स्थान दिया गया है। यह पाठ्यक्रम छात्रों में पाठ्यकृतियों के संदर्भ में समीक्षा की क्षमता को बढ़ायेगे। इस पाठ्यक्रम के अध्ययन के पश्चात छायावाद के स्वरूप और प्रवृतियों के अलावा युगीन प्रमुख कवियों की रचनाओं के अध्ययन, आस्वादन और मूल्यांकन कर सकेंगे। इसी बात को ध्यान में रखकर इसे पाठ्यक्रम में रखा गया है।

पाठ्यपुस्तक - प्रसाद, निराला, पंत, महादेवी की श्रेष्ठ रचनाएँ - सं० डॉ० वाचस्पति, लोकभारती प्रकाशन , इलाहाबाद,

इकाई -1 L-18, T- 4 **अंक - 20**

छायावाद - सामान्य परिचय, विशेषताएँ, छायावाद के स्तम्भ चारों कवियों का परिचय,
जयशंकर प्रसाद का व्यक्तित्व एवं कृतित्व, जयशंकर प्रसाद की कविता, (हिमाद्रि तुंग शृंग से , बीती विभावरी जाग री, मेरे नाविक, सौंदर्य, कौन तुम! संसृति-जलनिधि तीर,)

इकाई -2 L-18, T- 4 **अंक - 20**

छायावादी कवियों में सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' का स्थान,
'निराला' की कविता (वसंत आया, जागो फिर एक बार, स्नेह निर्झर बह गया है, सरोज-स्मृति,)

इकाई -3 L-17, T- 3 **अंक - 20**

छायावादी कवियों में सुमित्रानंदन पंत का स्थान, पंत के काव्य साहित्य का संक्षिप्त परिचय,
पंत की प्रमुख कविता (ताज , द्रुत झरो जगत के जीर्ण पत्र, भारत माता,)

इकाई - 4 L-17, T- 3 **अंक - 20**

छायावादी कवियों में महादेवी का स्थान - महादेवी के काव्य साहित्य का संक्षिप्त परिचय, महादेवी की कविता (जीवन विरह का जलजात , मधुर-मधुर मेरे दीपक जल , मैं नीर भरी दुख की बदली, पंथ होने दो अपरिचित),

सहायक ग्रंथ -

1. छायावाद - डॉ० नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली,
2. छायावाद के आधार स्तम्भ - गंगा प्रसाद पाण्डेय,
3. आधुनिक हिंदी काव्य - सं० सत्यनारायण सिंह,
4. हिंदी साहित्य का सुबोध इतिहास - बाबू गुलाब राय, लक्ष्मी नारायण प्रकाशन, आगरा,
5. आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास - डॉ० बच्चन सिंह, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद,
6. आधुनिक साहित्य की प्रवृतियाँ- डॉ० नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली,

DISCIPLINE SPECIFIC ELECTIVE COURSE (DSE)

(विषय आधारित ऐच्छिक पाठ्यक्रम)

त्रिवर्षीय स्नातक हिंदी प्रतिष्ठा पाठ्यक्रम (कोर कोर्स)

HINDI (HONOURS) CORE COURSE (CC)

COURSE DSE-3 [Credit - 6] (L - 5, T - 1)

[व्याख्यान : 14 X 5 = 70 (5 क्रेडिट) शिक्षण 14 X 1 = 14 (1 क्रेडिट)]

Total Marks-100 (Th-80+IA-20)

तुलसीदास

विषयगत विशेष ऐच्छिक पाठ्यक्रम के संयोजन का एक विशेष महत्त्व है। संत कवि तुलसीदास की रचनाओं पर आधारित यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों के लिए अत्यंत लाभदायक सिद्ध होगा। उनके द्वारा लिखित भक्ति के पद सम्पूर्ण भक्ति साहित्य का अनमोल निधि हैं । उन्होंने **रामचरितमानस** की रचना कर तत्कालीन अशांत भारत में आदर्श और मर्यादा को पुनः स्थापित किया था। उनका काव्य लोकमंगल का काव्य है। इसीलिए आज भी तुलसीदास की रचनाएँ प्रासंगिक हैं। इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य और इसकी प्रमुख उपलब्धियाँ कुछ प्रकार हैं - तुलसीदास के असाधारण व्यक्तित्व पर प्रकाश डालना। **रामचरितमानस** के अध्ययन से विद्यार्थियों को आदर्श और मर्यादा के साथ साथ नैतिक ज्ञान भी प्राप्त होगा। **कवितावली** और **गीतावली** के माध्यम से तुलसीदास की काव्य प्रतिभा तथा भक्ति की जानकारी प्राप्त होगी। **विनयपत्रिका** हिंदी साहित्य का अनमोल निधि है। तुलसीदास ने **विनयपत्रिका** में दास्य भक्ति का अत्यंत सुंदर प्रदर्शन किया है। आत्मसमर्पण का ऐसा निदर्शन अन्यत्र दुर्लभ है ।

पाठ्यपुस्तक -

1. **अयोध्या काण्ड - रामचरितमानस - तुलसीदास, गीताप्रेस, गोरखपुर,**
2. **कवितावली - तुलसीदास, गीताप्रेस, गोरखपुर,**
3. **गीतावली - तुलसीदास, गीताप्रेस, गोरखपुर,**
4. **दोहावली - तुलसीदास, गीताप्रेस, गोरखपुर,**
5. **विनयपत्रिका - तुलसीदास, गीताप्रेस, गोरखपुर**,

इकाई -1 L-20, T-4 अंक - 20

तुलसीदास : व्यक्तित्व और कृतित्व, रामचरितमानस : सामान्य परिचय,

इकाई -2 L-18, T-4 अंक - 20

रामचरितमानस : अयोध्याकाण्ड (10 दोहा - चौपाई, संख्या 67 से 76 तक),

इकाई -3 L-18, T-3 अंक - 20

कवितावली - (उत्तरकाण्ड 10 छंद, पद संख्या - 29, 35, 37, 44, 45, 60, 67, 73, 74, 84,)
भक्ति काव्य में कवितवाली का स्थान ,

गीतावली - (बालकांड 10 पद, पद संख्या - 7, 8, 9, 10, 18, 24, 26, 31, 33, 36,)
गीतावली का वर्ण्य विषय ,

इकाई -4 L-14, T-3 अंक - 20

विनयपत्रिका - (10 पद, पद संख्या - 1, 5, 17, 30, 36, 41, 45, 72, 78, 79,)
विनयपत्रिका में भक्ति ,

सहायक ग्रंथ -

1. तुलसी काव्य मीमांसा - डॉ० उदयभानु सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली,
2. तुलसीदास - सं० डॉ० उदयभानु सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली,
3. रामचरितमानस : अयोध्याकाण्ड - डॉ० योगेंद्र प्रताप सिंह, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद,
4. तुलसीदास जीवनी और विचारधारा- डॉ० राजाराम रस्तोगी,
5. तुलसी और उनका काव्य - डॉ० उदयभानु सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली,
6. विनयपत्रिका : एक मूल्यांकन - डॉ० हरिचरण शर्मा,
7. तुलसीदास - सं० डॉ० वासुदेव सिंह - अभिव्यक्ति प्रकाशन, इलाहाबाद,
8. तुलसीदास - आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी,

DISCIPLINE SPECIFIC ELECTIVE COURSE (DSE)

(विषय आधारित ऐच्छिक पाठ्यक्रम)

त्रिवर्षीय स्नातक हिंदी प्रतिष्ठा पाठ्यक्रम (कोर कोर्स)

HINDI (HONOURS) CORE COURSE (CC)

COURSE DSE-4 [Credit - 6] (L - 5, T - 1)

[व्याख्यान : 14 X 5 = 70 (5 क्रेडिट) शिक्षण 14 X 1 = 14 (1 क्रेडिट)]

Total Marks-100 (Th-80+IA-20)

प्रेमचंद

हिंदी साहित्य के इतिहास में गद्य लेखन का उदय एक महत्वपूर्ण घटना के रूप में सामने आती है। साहित्यिक रूप में गद्य लेखन की शुरूआत सर्वप्रथम भारतेन्दु युग से होती है , लेकिन यहाँ भी गद्य का विकसित रूप निखर कर नहीं आ पाता है। 20 वीं शताब्दी के शुरूआत में गद्य लेखन का सुव्यवस्थित रूप हमारे सामने उभर कर सामने आता है। कथा सम्राट प्रेमचंद का आगमन इस काल में एक युगांतकारी के रूप में होता है , जो सूर्य की तरह अपने साहित्य से न केवल हिंदी जगत को बल्कि पूरे भारत को प्रकाशित करने लगते है। वे केवल कहानीकार और उपन्यासकार ही नहीं , एक नाटककार और निबंधकार भी थे। ऐसे साहित्यकार के बारे में जानना जरूरी हो जाता है। इस बात को ध्यान में रखकर इसे पाठ्यक्रम में स्थान दिया गया है।

पाठ्यपुस्तक - मानसरोवर- 8 भाग,

इकाई -1 L-20, T-4 अंक - 20

उपन्यास : सेवासदन - प्रेमचंद,

इकाई -2 L-16, T-3 अंक - 20

नाटक : कर्बला - प्रेमचंद,

इकाई -3 L-16, T-3 अंक - 20

निबंध : साहित्य का उद्देश्य - प्रेमचंद,

इकाई -4 L-18, T-4 अंक - 20

कहानी : प्रेमचंद - पंच परमेश्वर, दो बैलों की कथा, शतरंज के खिलाड़ी, ईदगाह, दूध का दाम,

सहायक ग्रंथ -

1. प्रेमचंद - डॉo रामविलास शर्मा, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली,
2. हिंदी का गद्य साहित्य - डॉo रामचंद्र तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी,
3. आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास - डॉo बच्चन सिंह, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद,
4. हिंदी कहानी का इतिहास - भाग 1, 2, 3, - डॉo गोपाल राय, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली,
5. उपन्यास साहित्य का इतिहास - डॉo गोपाल राय, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली,
6. हिंदी कहानी का विकास - मधुरेश - सुमित प्रकाशन, इलाहाबाद,
7. आधुनिक हिंदी उपन्यास (दो खंड) - डॉo नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली,

GENERIC ELECTIVE COURSE (GEC)

सामान्य (Generic) ऐच्छिक पाठ्यक्रम

त्रिवर्षीय स्नातक हिंदी प्रतिष्ठा पाठ्यक्रम (कोर कोर्स)

HINDI (HONOURS) CORE COURSE (CC)

COURSE GEC-1 [Credit - 6] (L - 5, T - 1)

[व्याख्यान : 14 X 5 = 70 (5 क्रेडिट) शिक्षण 14 X 1 = 14 (1 क्रेडिट)]

Total Marks-100 (Th-80+IA-20)

आधुनिक भारतीय कविता

साहित्य अपने समय का सच्चे अर्थों में प्रतिबिंब होता है। भारत एक बहुभाषिक देश है। हर भाषा का अपना साहित्य होता है। कवि अपने समाज की गतिविधियों पर पैनी निगाह रखता है और समाज में जो गतिविधियां चलती रहती है ; उसे ही आधार बनाकर अपनी भावनाओं को शब्दबद्ध कर कविता का रूप देता है। एक भाषा के कवियों की संवेदना , भाव एवं विचार दूसरी भाषा के कवियों में भी एक साथ दिखाई देती है , यानी संवेदना, भाव एवं विचार पूरे देश के कवियों की एक ही होती है। इस पत्र में उत्तर से दक्षिण और पूरब से पश्चिम तक के कवियों की संवेदनाओं को एक साथ समझने का साझा प्रयास किया गया है। इस पत्र के माध्यम से छात्र हिंदी कविताओं के अलावा दूसरी भाषा के कवियों की कविताओं का एक साथ आनंद उठा सकेंगे। इसी उद्देश्य से इसे पाठ्यक्रम में रखा गया है।

पाठ्यपुस्तक - आधुनिक भारतीय कविता - सं० डॉ० अवधेश नारायण मिश्र एवं डॉ o नन्द किशोर पाण्डेय - विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी,

इकाई -1 L-18, T-4 **अंक - 20**

असमिया कविता :

नवकांत बरूआ - धनशिरी के लिए दो स्तबक,

नीलमणि फूकन - कविता,

बांग्ला कविता:

रवीन्द्रनाथ टैगोर - शंख,

काजी नज़रूल इस्लाम - साम्यवाद,

इकाई -2 L-18, T-4 **अंक - 20**

उर्दू कविता:

गालिब - गजल - 1, 2

फ़िराक गोरखपुरी - आज दुनिया पे रात भारी है,

संस्कृत कविता :

श्रीधर भास्कर वर्णेकर - न्याय देवता,

राधावल्लभ त्रिपाठी - पत्र मंजूषा,

इकाई -3 L-18, T-3 अंक - 20

तमिल कविता:

सुब्रमण्यम भारती - स्वतंत्रता,

वैरमुत्तु - भूमि पर आए नव शताब्द हे!,

गुजराती कविता:

उमाशंकर जोशी - वर दे इतना, छोटा मेरा खेत,

संस्कृति रानी देसाई - ढोल,

इकाई -4 L-16, T-3 अंक - 20

कश्मीरी कविता:

जिंदा कौल - नाविक, मुझे और मेरे ग्रामवासियों को ले चलो,

चंद्रकांता - निष्कासितों की बस्ती में,

सहायक ग्रंथ -

1. रवीन्द्र नाथ की कवितायेँ - प्रकाशक - साहित्य अकादमी, नई दिल्ली,
2. गालिब और उनकी शायरी - सं० प्रकाश पंडित, राजपाल प्रकाशन, दिल्ली,
3. फ़िराक गोरखपुरी और उनकी शायरी - सं० प्रकाश पंडित, राजपाल प्रकाशन, दिल्ली,
4. मिर्ज़ा गालिब की जीवनी और शायरी - WWW. Freehindipdfbook..com

GENERIC ELECTIVE COURSE (GEC)

सामान्य (Generic) ऐच्छिक पाठ्यक्रम

त्रिवर्षीय स्नातक हिंदी प्रतिष्ठा पाठ्यक्रम (कोर कोर्स)

HINDI (HONOURS) CORE COURSE (CC)

COURSE GEC-2 [Credit - 6] (L - 5, T - 1)

[व्याख्यान : 14 X 5 = 70 (5 क्रेडिट) शिक्षण 14 X 1 = 14 (1 क्रेडिट)]

Total Marks-100 (Th-80+IA-20)

सम्पादन प्रक्रिया और साज सजा

सम्पादन प्रक्रिया और साज-सज्जा साधारण ऐच्छिक पाठ्यक्रम के अंतर्निहित है । यह एक व्यवहारिक और लाभदायक पाठ्यक्रम है; जिसके सहारे विद्यार्थी ज्ञानार्जन के साथ साथ रोज़गार के लिए भी प्रशिक्षित हो सकते हैं । इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य और इसकी प्रमुख उपलब्धियाँ कुछ इस प्रकार हैं - संपादन कार्य और प्रिंट मीडिया का अध्ययन विद्यार्थियों के लिए सैद्धांतिक और व्यावहारिक दोनों दृष्टियों से लाभदायक साबित होगा । छायाचित्र, कार्टून, रेखाचित्र, ग्राफिक्स आदि वर्तमान समाज में काफ़ी लोकप्रिय और सराहनीय कला मानी जाती है; इसका अध्ययन रोज़गार प्राप्ति में सहायक होगा । पत्र -पत्रिका की साज-सज्जा भी वर्तमान समय में काफ़ी महत्व रखता हैं । इनका अध्ययन व व्यावहारिक अनुशीलन विद्यार्थियों के लिए फायदेमंद हैं; जिससे उन्हें रोज़गार प्राप्ति में सहायता मिलेगी। इसके अलावा प्रस्तुत पाठ्यक्रम के अध्ययन से हिंदी के राष्ट्रीय एवं प्रांतीय समाचार पत्रों की भाषा, आंचलिक प्रभाव, वर्तनी की समस्या आदि के बारे में जानकारी मिलेगी ।

इकाई -1 L-18, T-4 **अंक - 20**

संपादन : अवधारणा, उद्देश्य, आधारभूत तत्व,
संपादन -- कला के सामान्य सिद्धांत,
संपादक और उप-संपादक : योग्यता, दायित्व और महत्व,

इकाई -2 L-17, T-3 **अंक - 20**

लेखन प्रविधि एवं प्रक्रिया- समाचार संपादान, प्रिंट मीडिया की प्रयोजनपरक शब्दावली, संपादकीय लेखन : प्रमुख तत्व एवं प्रविधि, मूल्य, लीड, आमुख ,शीर्षक – लेखन आदि प्रत्येक दृष्टि से चयनित सामग्री का मूल्यांकन और

इकाई -3 L-17, T-3 **अंक - 20**

समाचार पत्र और पत्रिका के विविध स्तंभों की योजना और उनका संपादन,
छायाचित्र , कार्टून, रेखाचित्र, ग्राफिक्स आदि का संपादन,

इकाई -4 L-18, T-4 **अंक - 20**

हिन्दी के राष्ट्रीय और प्रांतीय समाचार पत्रों की भाषा, आंचलिक प्रभाव और वर्तनी की समस्याएँ,
साज -सज्जा और तैयारी : ग्राफिक्स और आकल्पन के मूलभूत सिद्धांत ,
मुद्रण के तरीके,

सहायक ग्रंथ -

1. सृजनात्मक साहित्य - रवीन्द्रनाथ श्री वास्तव, पाठ संपादन के सिद्धान्त - डॉo कन्हैया सिंह, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद,
2. संपादन कला :द आर्ट ऑफ एडिटिंग - राजशेखर मिश्र, डायमंड बुक्स, नई दिल्ली,
3. समाचार संपादन - कमल दीक्षित एवं महेश दर्पण, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली,
4. समाचार- संकलन और संपादन कला - डॉ .जितेंद्र वत्स; डॉ .किरणवाला, सौरभ प्रकाशन,
5. समाचार- पत्र लेखन और संपादन - डॉ .रमेश मेहरा; जैन बूक एजन्सि, दिल्ली ,
6. समाचार, फीचर-लेखन एवं संपादन कला - डॉ .हरिमोहन, हिंदी बुक सेंटर, नई दिल्ली,
7. जनसंचार और मास कल्चर - जगदीश्वर चतुर्वेदी,

GENERIC ELECTIVE COURSE (GEC)

सामान्य (Generic) ऐच्छिक पाठ्यक्रम

त्रिवर्षीय स्नातक हिंदी प्रतिष्ठा पाठ्यक्रम (कोर कोर्स)

HINDI (HONOURS) CORE COURSE (CC)

COURSE GEC-3 [Credit - 6] (L - 5, T - 1)

[व्याख्यान : 14 X 5 = 70 (5 क्रेडिट) शिक्षण 14 X 1 = 14 (1 क्रेडिट)]

Total Marks-100 (Th-80+IA-20)

सर्जनात्मक लेखन के विविध क्षेत्र

प्रस्तुत पाठ्यक्रम साधारण ऐच्छिक पाठ्यक्रम के अंतर्निहित हैं । स्रजनात्मक लेखन द्वारा विद्यार्थियों को व्यवहारिक व रोजगार संबंधित ज्ञान प्राप्त होगा । स्रजनात्मक लेखन में विविध प्रकार के लेखन कार्य शामिल होते हैं; जैसे -पत्र, फीचर, रिपोतार्ज, साक्षात्कार, सांस्कृतिक पत्रकारिता आदि । यें सभी रोज़मर्रा के जिंदेगी में अलग अलग भूमिका निभाती नज़र आती हैं । इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य और इसकी प्रमुख उपलब्धियाँ कुछ प्रकार हैं - पत्रकारिता का क्षेत्र बहुत विशाल है, इसके अध्ययन से विद्यार्थियों को बहुत लाभ होगा । इसके अतिरिक्त फीचर, रिपोतार्ज, सांस्कृतिक पत्रकारिता जैसे नए-नए विधाओं के संयोजन ने विद्यार्थियों के लिए विकास का नया मार्ग खोल दिया हैं । साक्षात्कार एक ऐसी विधा है जिसके द्वारा विद्यार्थी व पाठक अपने मनचाहे व्यक्ति के साथ रूबरू होने का अवसर प्राप्त होता हैं। विद्यार्थी यह कला सीख ले तो भविष्य में वे इसे स्वयं ही इसका लाभ उठा सकते हैं । इसके अलावा प्रस्तुत पाठ्यक्रम के जरिए छायाचित्र, कार्टून, रेखाचित्र, ग्राफिक्स बाजार, खेलकूद, फिल्म, पुस्तक आदि के कला से संबंधित सभी प्रकार की जानकारी प्राप्त की जा सकती हैं ।

इकाई -1 L- 20, T- 4 **अंक - 20**

रिपोतार्ज : अर्थ, स्वरूप, प्रविधि और प्रक्रिया,
फीचर – अर्थ, स्वरूप, प्रविधि और प्रक्रिया,
लेखन प्रविधि - सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक,विज्ञान, पर्यावरण, खेलकूद से संबंध विषयों पर फीचर लेखन,

इकाई -2 L-20, T- 4 **अंक - 20**

साक्षात्कार : अर्थ स्वरूप, प्रकार, प्रविधि और प्रक्रिया, समाचार पत्र - सावधि पत्रिकाओं के लिए समसामयिक, ज्ञानवर्धक और मनोरंजक सामग्री का लेखन,

इकाई -3 L-15, T-3 **अंक - 20**

दृश्य - सामग्री छायाचित्र, कार्टून, रेखाचित्र, ग्राफिक्स आदि से संबन्धित लेख,
सप्ताहांत अतिरिकत सामग्री और परिशिष्ट,

इकाई -4 L-15, T-3 **अंक - 20**

बाजार, खेलकूद, फिल्म, पुस्तक और कला समीक्षा,
आर्थिक पत्रकारिता, खेल पत्रकारिता, ग्रामीण और विकास पत्रकारिता, फोटो पत्रकारिता,

सहायक ग्रंथ-

1. आधुनिक पत्रकारिता :डॉ .ओम प्रकाश ,
2. सृजनात्मक साहित्य :रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव,
3. व्यावहारिक पत्र-लेखन कला :ब्रजकिशोर प्रसाद सिंह; सत्साहित्य प्रकाशन ,
4. आधुनिक पत्र लेखन-योगेश चंद्र जैन,
5. रचनात्मक लेखन -सं .रमेश गौतम ,
6. साहित्य का सौंदर्य चिंतन -रवींद्रनाथ श्रीवास्तव ,
7. फीचर लेखन : स्वरूप और शिल्प -डॉ मनोहर प्रभाकर ,
8. फीचर लेखन :संजय श्रीवास्तव ,
9. समाचार, फीचर-लेखन एवं संपादन कला -डॉ .हरिमोहन, हिंदी बुक सेंटर,

GENERIC ELECTIVE COURSE (GEC)

सामान्य (Generic) ऐच्छिक पाठ्यक्रम

त्रिवर्षीय स्नातक हिंदी प्रतिष्ठा पाठ्यक्रम (कोर कोर्स)

HINDI (HONOURS) CORE COURSE (CC)

COURSE GEC-4 [Credit - 6] (L - 5, T - 1)

[व्याख्यान : 14 X 5 = 70 (5 क्रेडिट) शिक्षण 14 X 1 = 14 (1 क्रेडिट)]

Total Marks-100 (Th-80+IA-20)

हिंदी की सांस्कृतिक पत्रकारिता

सांस्कृतिक पत्रकारिता समय के साथ समाज और संस्कृति की दिग्दर्शिता और नियामिका है। हिंदी की सांस्कृतिक पत्रकारिता आज बहुमुखी और समृद्ध कही जा सकती है। प्रस्तुत पाठ्यक्रम में हिंदी की सांस्कृतिक पत्रकारिता की अवधारणा, सांस्कृतिक संवाद की विशेषताएँ, पर्यटन तथा चित्र पत्रकारिता के बारे में विस्तार से वर्णन है। इस पाठ्यक्रम के अध्ययन के पश्चात विद्यार्थियों का पर्याप्त लाभ होगा। जो विद्यार्थी मंचकला , तथा पत्रकारिता को अपना कैरियर बनाना चाहते हैं उन्हें विशेष लाभ होगा। अन्य विद्यार्थियों को भी पत्रकारिता के प्रति समझ बढ़ेगी।

इकाई -1 L- 18, T- 4 अंक - 20

सांस्कृतिक पत्रकारिता अवधारणा, अर्थ और महत्व,

संस्कृति - अर्थ, स्वरूप एवं भेद,

सांस्कृतिक संवाद: अर्थ भेद और विशेषताएँ,

सांस्कृतिक संवाददाता की योग्यताएँ: आस्वादन, अन्वीक्षण, कल्पनाशीलता आदि,

इकाई -2 L- 17, T- 3 अंक - 20

सांस्कृतिक संवाद: परिचय और क्षेत्र,

मंचकला एवं पत्रकारिता: स्वरूप एवं तत्व,

चित्रकला : शिल्पकला, स्थापत्यकला के कार्यक्रम, संवाद लेखन और समीक्षा,

इकाई -3 L- 18, T- 4 अंक - 20

पर्यटन पत्रकारिता : स्वरूप एवं प्रकार ,

छायाचित्र और प्रयोग : स्वरूप एवं प्रकार,

इकाई - 4 L- 17, T- 3 अंक - 20

चित्र पत्रकारिता : स्वरूप, प्रकार एवं प्रयोग,

चलचित्र पत्रकारिता : सिद्धांत प्रकार एवं व्यवहार ,

सहायक ग्रंथ -

1. रेडियो-दूरदर्शन पत्रकारिता- डॉ0 हरिमोहन,
2. पत्रकारिता के विविध आयाम- डॉo राजेन्द्र मिश्र, तक्षशीला प्रकाशन, नई दिल्ली,
3. इक्कीसवीं सदी और हिंदी पत्रकारिता - अमरेन्द्र कुमार,
4. जनसंचार माध्यम और पत्रकारिता: विविध आयाम- डॉo ओम प्रकाश शर्मा,
5. जनसंचार माध्यम: चुनौतियाँ और दायित्व - डॉo त्रिभूवन राय, श्याम प्रकाशन, जयपुर,
6. पत्रकारिता से मीडिया तक - मनोज कुमार,

चयन आधारित क्रेडिट पद्धति

CHOICE BASED CREDIT SYSTEM

त्रिवर्षीय स्नातक हिंदी प्रतिष्ठा पाठ्यक्रम (कोर कोर्स)

HINDI B.A. / B.COM / B.SC. (HONOURS) 1st - SEMESTER

COURSE MIL-1 [Credit - 2] (L - 1, T - 1)

[व्याख्यान : 14 X 1 = 14 (1 क्रेडिट) शिक्षण 14 X 1 = 14 (1 क्रेडिट)]

Total Marks-50 (Th-40+IA-10)

हिंदी काव्य एवं गद्य साहित्य

आधुनिक भारतीय भाषा एक अनिवार्य पत्र है ; जिसे हर छात्र को पढ़ना पड़ता है। इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थियों को साहित्य की हर विधा से परिचित कराने का प्रयास किया गया है। इस पत्र का मुख्य उद्देश्य छात्रों को भक्तिकालीन उच्चादर्श की ओर ध्यान दिलाना है। इसके साथ ही छायावादी , रहस्यवादी कविताओं के सौन्दर्य के अलावा प्रगतिवाद के समर्थक कवि 'केदारनाथ अग्रवाल' और प्रयोगवाद के जनक कवि 'अज्ञेय' के व्यक्तिवादी व्यक्तित्व को समझने का प्रयास है। बीसवीं शती में जन्म लेकर और कुछ ही समय में विकसित होकर साहित्य के एक महत्वपूर्ण विधा के रूप में स्थान बनाने वाली 'कहानी' और 'गद्य की कसौटी' 'निबंध' को भी स्थान दिया गया है। भारतीय संस्कृति , सांस्कृतिक एकता और व्यंग निबंधों का मुख्य विषय है।

पाठ्यपुस्तक - 1. काव्य सुषमा - सं० सत्यकाम विद्यालंकार, नया साहित्य, कश्मीरी गेट, दिल्ली,

2. कथा कहानी - सं० डॉ० सुधाकर सिंह, जयभारती प्रकाशन, इलाहाबाद,

3. निबंध निकष - सं० डॉ० रामचन्द्र तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी,

इकाई -1 L-5, T-2 अंक - 10

प्राचीन काव्य -

कबीर पद - 1. मोकों कहाँ ढूँढे बंदे, 2. मन मस्त हुआ तब क्यों बोले,

सूरदास पद - 1. किलकत कान्ह घुटुरूवनि आवत 2. बिनु गोपाल बैरिनि भई कुंजै,

तुलसीदास - 1. सीस जटा उर-बाहु बिसाल, (कवितावली)

2. सुनि सुंदर बैन सुधारस साने ,

इकाई -2 L-5, T-2 अंक - 10

आधुनिक काव्य -

जयशंकर प्रसाद - आंसूँ ,

'अज्ञेय' - नदी के द्वीप,

केदार नाथ अग्रवाल - लेखक की स्वतंत्रता ,

इकाई -3 L-5, T-2 अंक - 10

कहानी -

चीफ की दावत - भीष्म साहनी,

यही सच है - मन्नू भण्डारी,

पच्चीस चौका डेढ़ सौ - ओमप्रकाश वाल्मीकि,

इकाई -4 L-5, T-2 अंक - 10

निबंध -

कछुवा धरम - चंद्रधर शर्मा गुलेरी,

भारत की सांस्कृतिक एकता - रामधारी सिंह 'दिनकर',

पगडंडियों का जमाना - हरिशंकर परसाई,

सहायक ग्रंथ -

1. हिंदी का गद्य साहित्य - डॉ० रामचन्द्र तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी,
2. हिंदी कहानी का विकास - डॉ० गुलाबराय, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली,
3. आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास - डॉ० बच्चन सिंह, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद,